स्किन केयर स्पेशल

कॉर्न में अग्नि कर्म

पैर के तलवे में होने वाली मामूली सी तकलीफ कॉर्न इतनी पीड़ा दायक होती है कि रोगी का चलना भी मुश्किल कर देती है। जरा सी ठोकर लगने पर रोगी कराह उठता है। न जाने कितने उपाय व चिकित्सा करता है परंतु राहत नही पाता ऐसे केसेस में आयुर्वेद की अग्निकर्म चिकित्सा के उत्तम परिणाम मिलते है। आइये, कॉर्न व अग्निकर्म की जानकारी प्राप्त करें।

त्वचा के किसी भाग पर बार–बार दबाव पड़ने से व उस स्थान का घर्षण होने से वहां की त्वचा मोटी व कड़क हो जाती हैं। ऐसी ही स्थिती पैर के तलवों के साथ होती है जिसके परिणाम स्वरूप पैर के तलवों में कॉर्न(Corn) होता हैं। आयुर्वेद में इसे कदर, शर्करा, कंटक, कुरूप कहा जाता है। मराठी में इसे भोवरी कहते हैं। सामान्य भाषा में इसे गट्टा या गोरखुल भी कहते हैं। यह बाहय त्वचा के कठिन होने पर (Hyperkeratosis) से उत्पन्न होता है। इसका रंग पीताभ या हल्का धूसर वर्ण (Yellowish) होता है। (Hyperkeratosis is the thickning of stratum corninum layer of the skin.)

कारण - तंग जुता पहनने से, पैर के तलवों मे कंकड पत्थर लगना, सूई, काँच का टुकड़ा, लोहे की कील या यंत्र चुभना, कांटा लगना व तीक्ष्ण वस्तु चुभने से,नंगे पैर चलने से कॉर्न होता हैं। इसके अलावा हथेली में भी यह हो सकता हैं। जैसे हाथ से मेहनत करनेवाले, मजदूर, बागवानी करने वाले, जमीन खोदने वाले, वायलन बजाने वाले की हथेली या उंगलियों में भी कॉर्न होता हैं।

लक्षण - तलवों में बेर के समान कठिन व उभरी हुई गांठ होती है जिसमें तीव्र वेदना होती है। चलते समय, धक्का लगने से दर्द बढ़ जाता है। चलते समय पैर में किला ठोकने जैसी पीड़ा होती हैं। कई बार इसमें संक्रमण होने पर पस निकलता हैं। हाथ की उंगलियों के मूल भाग का मांस मोटा हो जाता है तथा अधिक कार्य करने पर उस कठिन मांस के नीचे फफोला (Blister)बन जाता हैं।

आधुनिक मतानुसार इसके दो प्रकार है

1) कठोर कॉर्न (Hard corn) - यह मोटी व मृत त्वचा की रचना होती है। जिसमें न्यूक्लियस भी रहता है।

2) मृदु कॉर्न (Soft corn)- इसका आवरण पतला सा होता है यह उंगलियों के बीच में होता है।

उपाय - 1) चप्पल मुलायम पहने व तंग जुता न पहने।

2) टंकण भस्म दही में मिलाकर लगाएं।

3) कॉर्न कैप लगाएं।

4) सैलीस्लीक एसिड (Salicylic Acid) का बीस प्रतिशत घोल रात्रि को पैर की त्वचा पर प्रयोग करें। एसिड प्रयोग के पश्चात गरम पानी में पैर डुबो कर रखें। यह प्रक्रिया 6–7 दिन लगातार करें, इससे कॉर्न निकल जाता है।

5) फिटकरी, सुहागा, नौसादर, सिरके को पीसकर लगाएं।

6) नींबु का गोल स्लाइस काटकर कॉर्न पर रात भर बांधकर रखें। 7) पपीते का जूस कॉर्न पर लगाएं। कई बार ऑपरेशन करने की भी नौबत आती हैं।

अनुभुत उपचार - 1) शतधौत घृत कांसे की कटोरी से घिस कर रोज रात में लगाए या शुद्ध घी भी लगा सकते है।

2) पिंड तेल कांसा या पीतल की कटोरी से घिसकर लगाएं।

3) एरंड या करंज के पत्ते पिसकर कॉर्न पर बांधे।

4) एलोविरा का गुदा कॉर्न पर रात भर बांधे।

5) करंज बीज या एरंडबीज में उपस्थित मगज रोज रात को कॉर्न पर घिस कर लगाएं।

ऑपरेशन - कदर को शस्त्र से काटकर फिर गर्म किये हुए तैल से जलाना चाहिए आधुनिक मतानुसार इसे पहले से तीक्ष्ण शस्त्र (Scalpel) से छिलते हैं। फिर उसे सैलीसिलिक अम्ल तथा ईथर का घोल (Colloidal Solution of Ether) लगा देते हैं या क्ष–किरण (x-ray-600r) की एक हल्की मात्रा देते है ।

कॉर्न में फलदायी अग्निकर्म

ऑपरेशन से बेहतर है अग्निकर्म जिसके कॉर्न पर सर्वश्रेष्ठ परिणाम पाये गये हैं। कार्न के रोगी को ऑपरेशन की जरूरत ही नहीं हैं।

कुछ वर्ष पूर्व हमारे आरोग्यधाम में प्रशांत जोशी नामक रूग्ण आया जो कॉर्न (कदर) से ग्रस्त था। दोनों पैरों में कॉर्न के कारण भयंकर पीड़ा व चलने में अत्यंत कष्ट था। हर तरह की दवा, इलाज कराया, कॉर्न कैप, केमिकल कैप, चीर लगाया पर उसे संतोष न हुआ। हमने उसे आयुर्वेदिक औषधि के साथ अग्निकर्म किया जिसका उसे आश्चर्यजनक लाभ मिला। उसका दर्द तो एक बार किए अग्निकर्म से समाप्त हो गया। कॉर्न को जड़सहित दूर करने के लिए उसे 3–4 बार और अग्निकर्म करना पड़ा। इस तरह आज वह पूर्ण रूप से स्वस्थ है और उसे पुनः अब तक कॉर्न नहीं हुआ हैं। इस तरह के अनेक रूग्ण कॉर्न व अन्य तरह के रोगों से त्रस्त होकर सही चिकित्सा के लिए इधर–उधर घुमते हैं परंतु ये ही रूग्ण अग्निकर्म से ठीक होते है।

अग्निकर्म शब्द सुनते ही मन में एक सिरहन सी उठती है क्योंकि यह अप्राकृतिक, अनोखी,अघोरी व डरावनी चिकित्सा लगती है किंतु घबराने की तनिक भी आवश्यकता नहीं है। चूंकि अग्निकर्म पूर्णतः वैज्ञानिक व शास्त्रोक्त पद्धति है। इसका उपयोग कई व्याधियों में सफलतापूर्वक किया जाता हैं। बशर्ते कि हम योग्य व अनुभवी अग्निकर्म चिकित्सक के मार्गदर्शन में अग्निकर्म कराएं। इस अग्निकर्म से संधिवात, घुटनों का दर्द, फ्रोजन शोल्डर (Frozen Shoulder), पैर की एड़ी में स्पर (Spur) अर्थात हड्डी बढ़ जाना इत्यादि वात रोगों में अच्छे परिणाम मिलते है।

डॉ. जी.एम.ममतानी, नागपुर

सेहत की सौगात, पुस्तकों के साथ

स्वास्थ्य का प्रसार, सुखी रहे संसार

योगासन

स्वस्थ जीवन का शिल्पकार

भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत इस पुस्तक में योग के इतिहास, विकास यात्रा से आधुनिक जीवन में इसके महत्व तक की समग्र जानकारी दी गई है. इसके अलावा सहज–सरल भाषा में योग की विभिन्न विधाओं व आहार–व्यवहार के संबंध में विस्तृत मार्गदर्शन किया गया है. पुस्तक सचित्र है.

मूल्यः ₹ 100.00

यौन–पथ

प्रदर्शिका

सेक्स अज्ञानता अथवा भ्रामक जानकारियां युवा वर्ग के लिए बेहद हानिकारक हैं. इस पुस्तक में न सिर्फ समस्त यौन भ्रांतियों एवं समस्याओं का निराकरण किया गया है, बल्कि इससे जुड़े विभिन्न पहलुओं को वैज्ञानिक ढंग से सामने लाया गया है. इसके अलावा विद्यार्थी जीवन में ब्रह्मचर्य के महत्व पर भी प्रकाश डाला गया है.

मूल्यः ₹ 125.00

पंचकर्म

स्वास्थ्य की कुंजी

पंचकर्म, अर्थात पांच ऐसे कर्म जो शरीर में उपस्थित विषाक्त पदार्थों को शरीर से बाहर निकालकर हमें स्वस्थ एवं निरोगी बनाते हैं. इस पुस्तक में सरल भाषा में पंचकर्म के विभिन्न चरणों की जानकारी के साथ ही बॉडी सर्विसिंग, केरलीय पंचकर्म, रसायन, अग्निकर्म, क्षारकर्म आदि के बारे में भी विस्तृत विवरण दिया गया है.

मूल्यः ₹ 150.00

सूचना : पुस्तक मूल्य के साथ 20 रु. प्रति पुस्तक डाक खर्च अतिरिक्त. तीनों पुस्तकें एक साथ मंगाने पर डाक खर्च मुफ्त. कृपया डी.डी. जीकुमार प्रकाशन या मनीआर्डर डॉ. जी.एम.ममतानी के नाम निम्न पते पर भेजें:

हमारे आगामी प्रकाशनों की जानकारी के लिए संपर्क करें:

जीकुमार आरोग्यधाम

आयुर्वेदिक पंचकर्म हॉस्पिटल एंड रिसर्च इंस्टीट्यूट,
238,कस्तूरबा नगर, नारा रोड, जरीपटका, नागपुर -14
फोन: 91-712-2645600, 2646600, 2647600
Website:mamtaniayurveda.com

डॉ. जी.एम.ममतानी
(एम.डी.)

डॉ. अंजू.जी.ममतानी
(बी.ए.एम.एस.)

लेखक परिचय

विगत 25 वर्षों से पुराने व असाध्य रोगों पर सफल आयुर्वेदिक पंचकर्म चिकित्सा सेवा प्रदान कर रहे डॉ. ममतानी दंपति, जीकुमार आरोग्यधाम के संचालक व स्वास्थ्य वाटिका पत्रिका के संपादक भी हैं. आरोग्यधाम हेल्थ केयर सोसाइटी के तहत इन्होंने अनेक स्थानों पर निःशुल्क आयुर्वेदिक, पंचकर्म व योगोपचार संबंधी शिविर, परिचर्चाओं व व्याख्यानों का आयोजन किया है. भारतीय चिकित्सा पद्धति के प्रचार–प्रसार हेतु अनेक समाचारपत्रों, पत्रिकाओं में लेखन के अलावा आकाशवाणी, दूरदर्शन पर इनकी स्वास्थ्य संबंधी वार्ताएं नियमित रूप से प्रसारित होती हैं. डॉ. ममतानी दंपति को उनकी सेवाओं हेतु अनेक राष्ट्रीय पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया है.